उपशास्त्री

Date 05.09.20
Page 2

अथ राजयोगानाह —

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रय संस्थितौ।
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥

अन्वय: — कर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रय संस्थितौ राजयोगौ भवत इति प्रोक्तम विख्यात: विजयी च भवेत्।

संस्कृत-कर्मलग्नेति — कर्मलग्नाधिनेतारौ दशम-लग्नाधीशौ, अन्योन्याश्रयसंस्थितौ अन्योन्यस्य परस्परस्य आश्रय: स्थानं तत्र संस्थितौ, कर्मेशो लग्नस्थाने, लग्नेश: कर्मस्थाने स्थितौ यदि स्यात्तदा तौ राजयोगौ राजयोगकारकौ स्त:। अस्मिन् योगे जात: नरो विख्यात: विशिष्टख्यातिवान् विजयी संग्रामविवादादिषु विजयशाली च भवेदिति।

क्षेमङ्करी — लग्नेश और दशमेश परस्पर दशम और लग्न में हों अथवा दोनों लग्न में या दशम में हों, ये दोनों स्थितियाँ राजयोग होते हैं। इन राजयोगों में मनुष्य जगत में विख्यात और विजयी होता है।

विमर्श- 1. लग्नेश व दशमेश का दशम भाव में स्थिति से।

2. लग्नेश व दशमेश का लग्न भाव में स्थिति से।

3. लग्नेश दशम में और दशमेश लग्न में होने से।

अत: ग्रन्थकार का अभिप्राय है कि लग्नेश से दशम (प्रबल केन्द्र) का पारस्परिक सम्बन्ध उत्कृष्ट राजयोग कारक है।

कर्मलग्नाधिनेतारावन्योन्याश्रय संस्थितौ।
राजयोगाविति प्रोक्तं विख्यातो विजयी भवेत् ॥

अन्वय: — कर्मलग्नाधिनेतारौ अन्योन्याश्रयसंस्थितौ

P.T.O

उपशास्त्री

Date 05.09.20
Page 1

शनिशुक्रयोर्भुक्ति व्यत्ययेन शुभत्वाशुभत्वमाह –

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥

अन्वयः – सूर्यज भार्गवौ परस्पर दशायां स्वभुक्तौ व्यत्ययेन विशेषेण शुभाशुभं प्रदिशेताम्।

संस्कृत – परस्परेति – सूर्यजभार्गवौ शनिशुक्रौ, परस्परदशायां परस्परमहादशायां, स्वभुक्तौ स्वान्तर्दशायां व्यत्ययेन वैपरीत्येन तु विशेषेण शुभाशुभं शुभमशुभञ्च फलं प्रदिशेताम् प्रयच्छेताम्। अत्राशयो विद्यते यदनयोर्मध्ये विशिष्टनैसर्गिको सम्बन्धो ग्रन्थकारैः कल्पितः। अथ शनिशुक्रयोरयं स्वभावोऽस्ति यदनयोर्मध्ये सम्बन्धोऽस्ति न वा, परस्परदशायां यदा निजान्तर्दशाऽऽगता, तदा शुक्रान्तर्दशायां शुक्रः शनेर्फलं, शन्यन्तर्दशायां शनिः शुक्रस्य फलं वैपरीत्येन प्रदद्युः। अत्रावधेयं यत् यदि शुक्रोऽशुभोऽस्ति, तत्र तस्य महादशायां शुभद शनेरन्तर्दशा काले अशुभमेव भवेत्। तद्वत् शनेर्महादशायां शुक्रान्तरे शुभोऽपि अशुभफलं प्रदद्युः।

क्षेमङ्करी – शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो, तो शुक्र शनि का फल देता है। वैसे ही शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो, तो शनि शुक्र का फल देता है। यह बिना सम्बन्ध के भी सम्बन्ध के जैसा फल होता है।

विमर्श – शुक्र व शनि नैसर्गिक रूप से एक दूसरे के मित्र हैं। अतः शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा जब भी आती है, तो शनि का ही विशेष फल मिलता है। इसी प्रकार शुक्र की महादशा में शनि का अन्तर जब भी आता है, तो शुक्र का ही विशेष फल मिलता है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ।

वस्तुनिष्ठप्रश्ना:
शास्त्री-I, II

05.09.20
4

(1) उदये दीप्यते पूर्वा पूर्वाह्णे पूर्वदक्षिणा।
मध्याह्ने दक्षिणा दीप्ताऽथापराह्णे तु नैर्ऋति॥
इति कस्य वाक्यम?
उत्तरम्- गर्गस्य।
(2) कतिविधानि दीप्तशकुनानि?
उत्तरम्- दशविधानि।
(3) पूर्वदिग्बलिन: कति जन्तव:?
उत्तरम्- अष्टौ।
(4) दार्वाघाट: पक्षी कस्यां दिशि बली?
उत्तरम्- उत्तरस्याम्।
(5) 'स्थाने व्रतयुक्ता वनिता सन्दर्शनं समुपयाति' इति कुत्र पठितम्?
उत्तरम्- बृहत्संहितायाम्।
(6) कति खगा: दिनचरा:?
उत्तरम्- द्वादश।
(7) कति जन्तव: रात्रिचरा:?
उत्तरम्- पञ्च।
(8) रात्रिदिवाचरा कति जन्तव:?
उत्तरम्- एकविंशति:।
(9) कस्य पक्षिण: शब्द: शुभकारी भवति?
उत्तरम्- भारद्वाजस्य।
(10) 'गमने यातुर्वेश्मगृहीतवक्त्रे सारमेये महानर्थलाभ:' इति कस्य कथनम्?
उत्तरम्- गर्गस्य।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राध्यापक (ज्योतिष)
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

Date 05.09.20
Page 3

राजयोगौ भवतः इति प्रोक्तम्। विख्यातः विजयी च भवेत्।

संस्कृत - धर्मलग्नेति - धर्मलग्नाधिनेतारौ नवमेशलग्नेशौ, अन्योन्याश्रय - संस्थितौ तत्र धर्मेशः लग्नस्थाने लग्नेशः धर्मस्थान इत्यर्थः वा उभौ मिलित्वैकत्र संस्थौ यदि स्यातां, तदा तौ राजयोगकारकविति प्रोक्तं शास्त्रे प्रतिपादितम्। अस्मिन योगेऽपि जातः विख्यातो विजयी च भवेदिति।

क्षेमङ्करी - नवमेश और लग्नेश परस्पर एक दूसरे के स्थान में हो अर्थात् लग्नेश नवम में और नवमेश लग्न में हो अथवा दोनों नवम में स्थित हो अथवा दोनों लग्न में स्थित हो, तो ये दोनों भी राजयोग होते हैं। इनमें भी विख्यात और विजय होते हैं।

विमर्श— 1. नवमेश व लग्नेश का नवम भाव में युति हो।
2. नवमेश व लग्नेश का लग्न में युति हो।
3. लग्नेश भाग्यभाव में और भाग्येश लग्न भाव में होने से।

डॉ० सुदिवर कुमार
सह० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।